Self Respect

09-09-2014

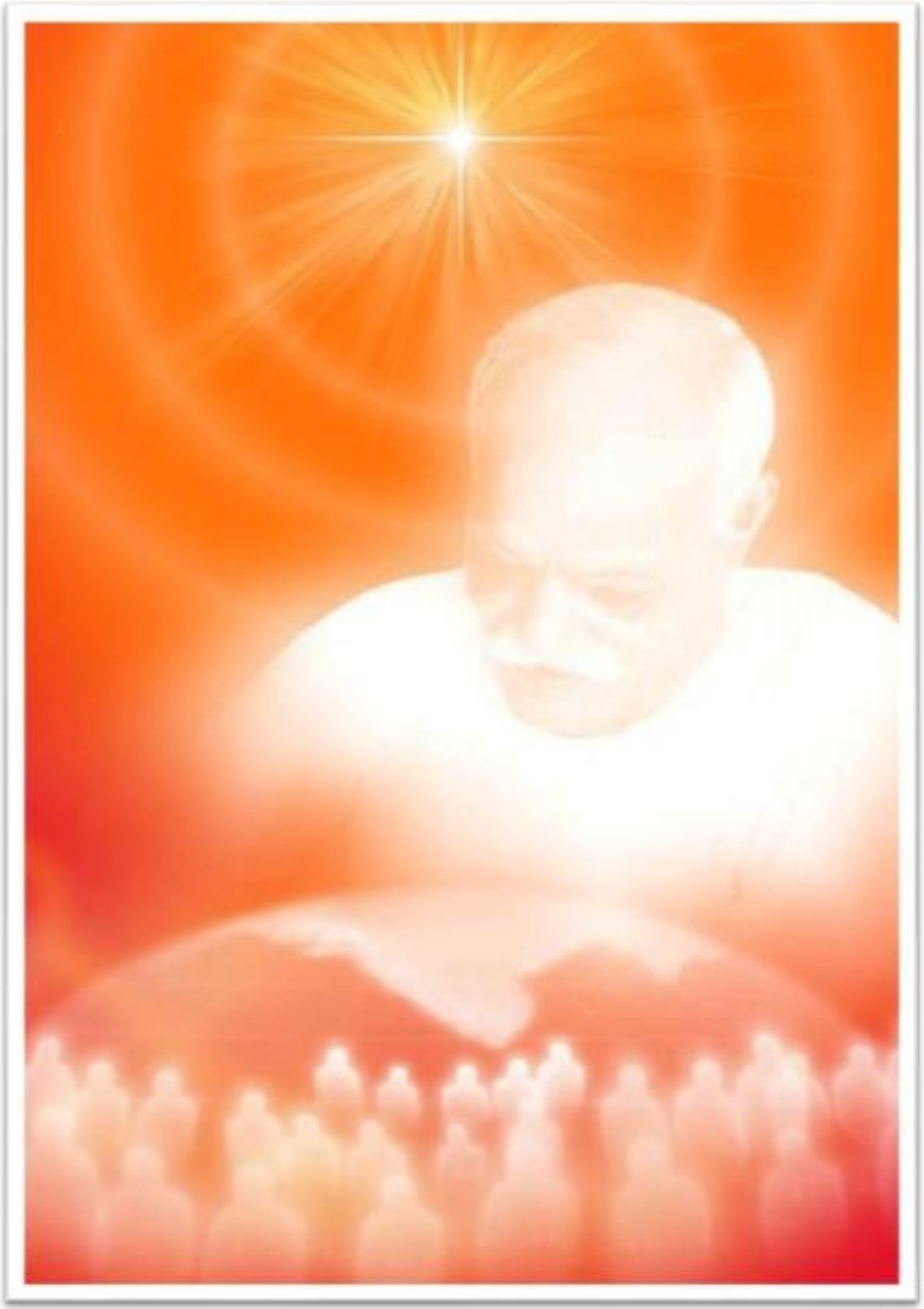

✓अभी तुम बच्चों को ज्ञान मिल रहा है । समझते हो जो भी पूज्य देवता थे वह पुनर्जन्म लेते आये हैं । आत्मा वही है, आत्मा का नाम नहीं बदलता । बाकी शरीर का नाम बदलता है ।

✓भक्तिमार्ग में थे तो उनको परमधाम में याद करते थे परन्तु यह नहीं जानते थे कि याद से क्या होगा । अभी तुम बच्चों को बाप खुद इस रथ में बैठ श्रीमत देते हैं, इसलिए तुम बच्चे समझते हो बाबा यहाँ इस मृत्युलोक में पुरूषोत्तम संगमयुग पर हैं ।

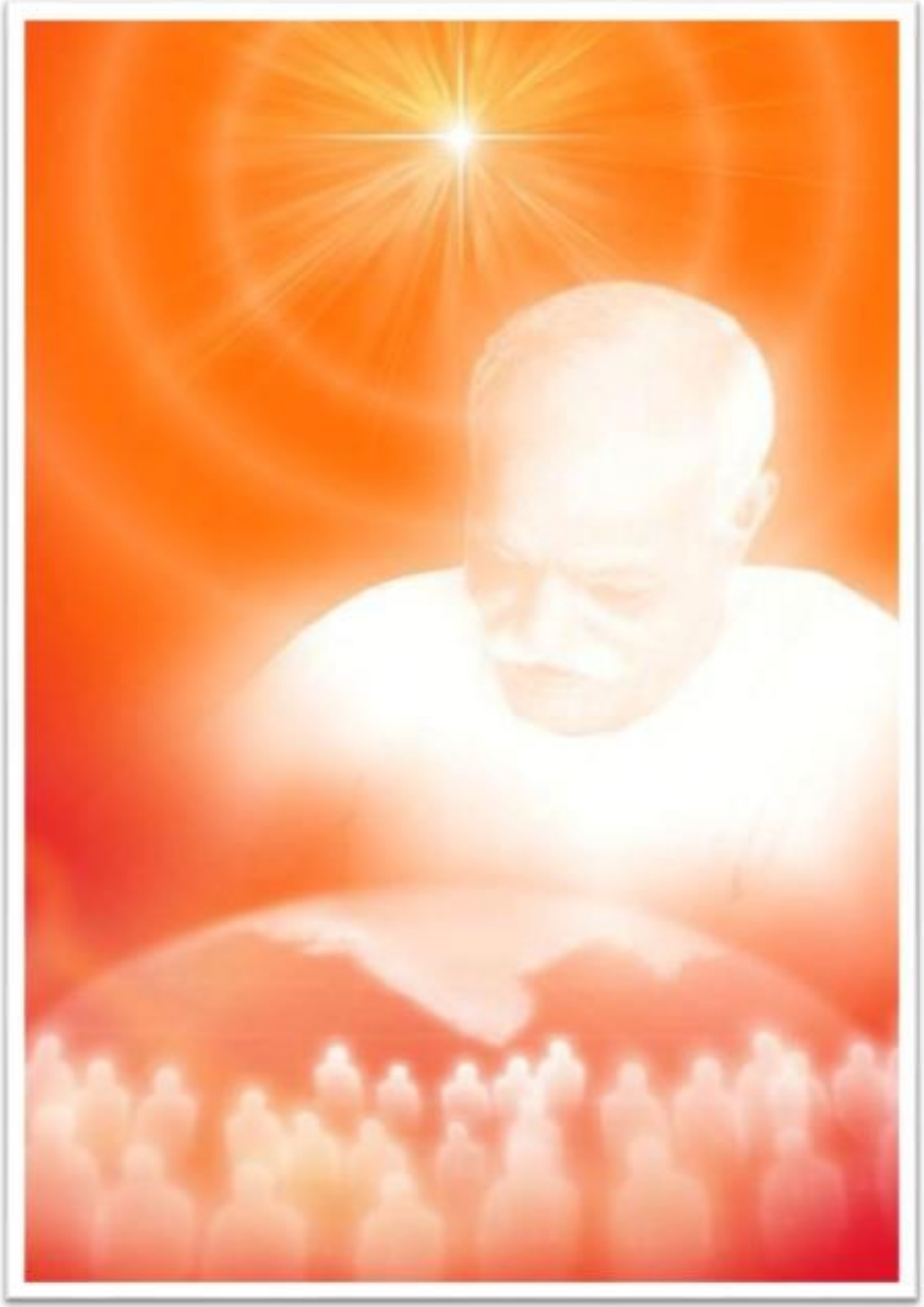

✓बाप ने कहा है - जब तुम सतोप्रधान थे तो तुम्हारा बहुत ऊंच पद था । अब फिर पुरूषार्थ करो, मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हों । मंजिल है ना । यह चिंतन करते-करते सतोप्रधान बनेंगे । नारायण का ही सिमरण करने से हम नारायण बनेंगे । अन्तकाल में जो नारायण सिमरे..... । तुमको बाप को याद करना है, जिससे पाप कटें । फिर नारायण बनें । यह नर से नारायण बनने की हाइएस्ट युक्ति है । एक नारायण तो नहीं बनेंगे ना । यह तो सारी डिनायस्टी बनती है । बाप हाइएस्ट पुरूषार्थ करायेंगे । यह है ही राजयोग की नॉलेज, सो भी पूरे विश्व का मालिक बनना है । जितना पुरूषार्थ करेंगे, उतना जरूर फायदा है ।

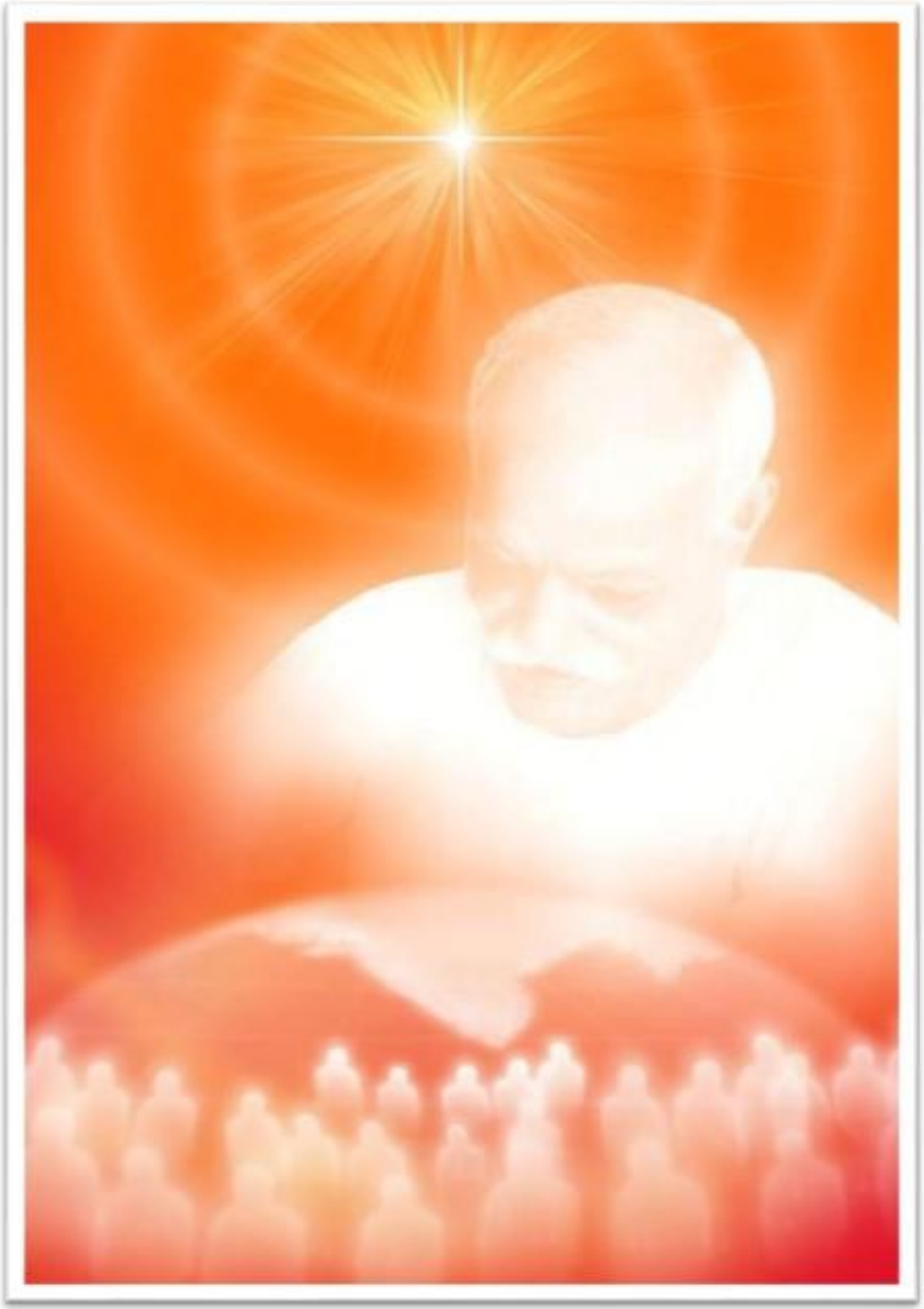

✓बाप कहते हैं मामेकम याद करो, मैं इस रथ में रहकर तुमको यह नॉलेज दे रहा हूँ । अपनी भी पहचान देता हूँ, मैं यहाँ हूँ ।

✓बाप ने समझाया है स्वर्ग में जाने के लिए तो पुरूषार्थ करना होता है और पुरानी दुनिया का अन्त, नई दुनिया की आदि चाहिए, जिनको पुरूषोत्तम संगमयुग कहा जाता है । यह ज्ञान अभी तुमको है । मनुष्य कुछ नहीं जानते ।

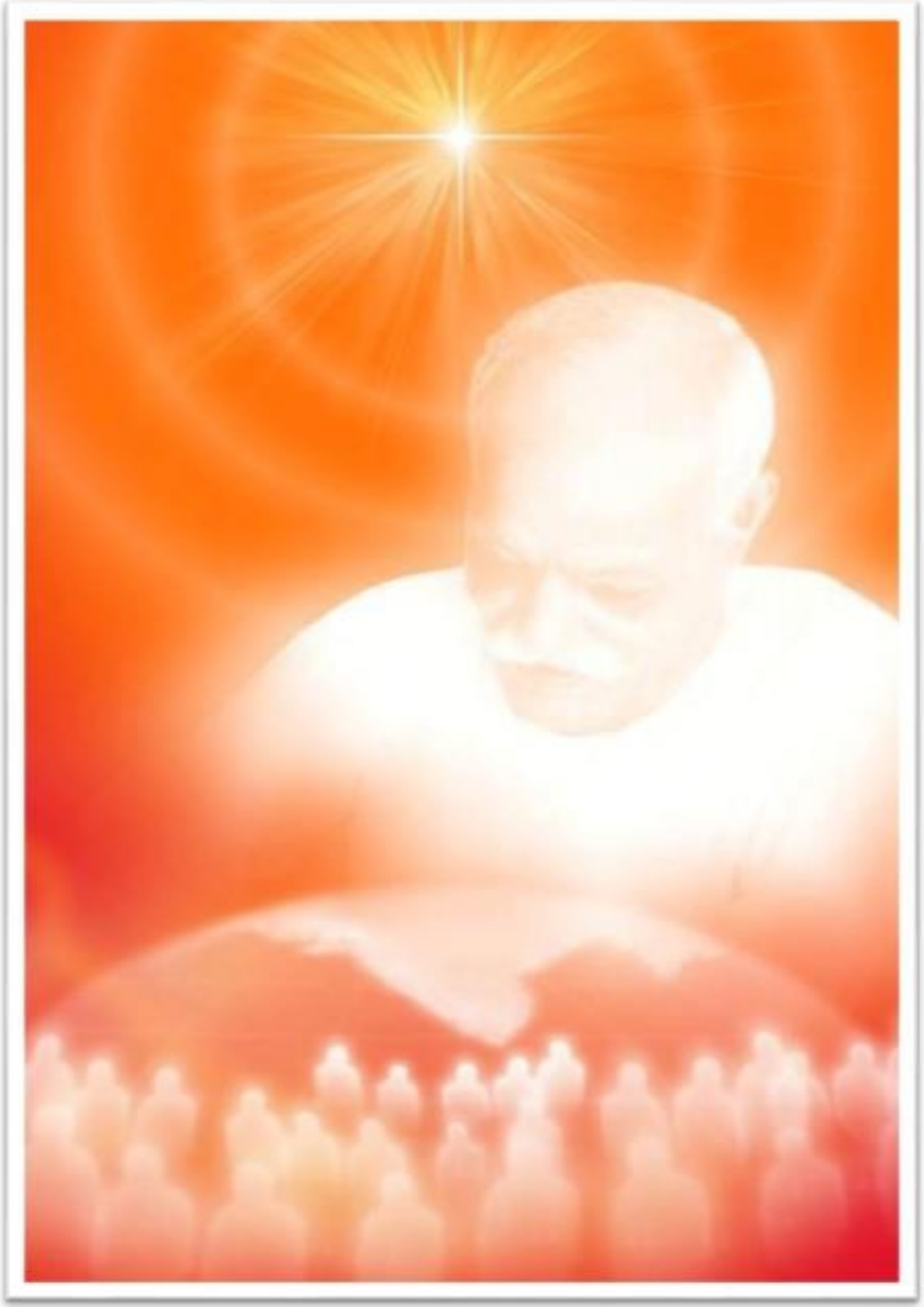

- ✓झाड़ को तो तुम जान गये हो । दुनिया में इन बातों को कोई भी नहीं जानते हैं । तुम सब धर्म वालों की तिथि-तारीख आदि सब बताते हो । आधाकल्प में यह सब आ जाते हैं । बाकी हैं सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी ।

- ✓सूक्ष्मवतन में क्या है, यह चित्र बना दिया है, जिस पर बाप समझाते हैं । तुम बच्चों को ऐसा सूक्ष्मवतन वासी फरिश्ता बनना है । फरिश्ते हड्डी-मास बिगर होते हैं ।

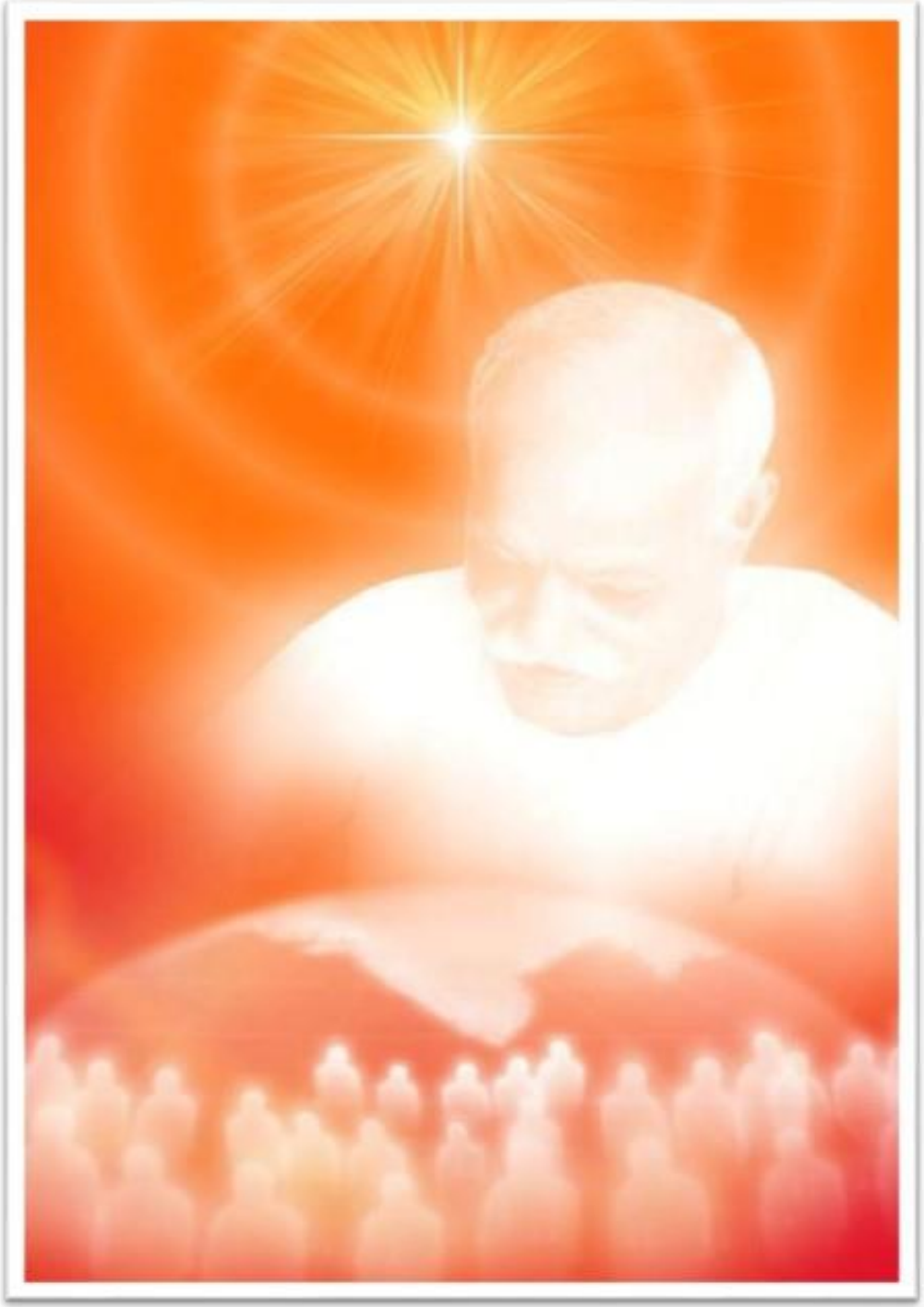

✓मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमोर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

✓वरदान: समय प्रमाण हर कार्य में सफल होने वाले ज्ञानी योगी तू आत्मा भव !